हिन्दी प्रदत्त कार्य

नाम : एस. दिव्या भारती

कक्षा : द्वीतीय वर्ष B.Sc (BZH)

महाविद्यालय : सासकीय महाविद्यालय ; पाडेरू

विषय :-

एच.आई.वी

एड्स

एड्स का इतिहास

1. सन् 1981 में, अमेरिका का लॉस एंजिल्स शहर के रोगियों में, डॉक्टरों को कुछ विशिष्ट लक्षण दिखाई दिए। वहाँ पर समलिंगी संयोग करने वाले कुछ युवा लोगों में एक विशिष्ट प्रकार लक्षण दिख पड़ी।

2. न्यूमोनिया और त्वचा का कर्करोग या कैंसर देखा गया।

3. इस रोग को गे-रिलेटेड इम्युनोडेफोशिएन्सी सिन्ड्रोम (GAY) या (GRID) नाम दिया गया,

4. बाद मे एक्वाइयर्ड इम्युनोडेफीशिएन्सी सिन्ड्रोम (AIDS) रखा गया।

5. सन् 1984 में फ्रांस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ ल्यूक मॉन्टग्नियर विषाणु की खोज की इसे। ह्यूमन इम्युनो डेफोशियन्सी वायरस नाम दिया गया।

अपने रिश्ते के प्रति रहिये ईमानदार नहीं बनेंगे एड्स के भागीदार

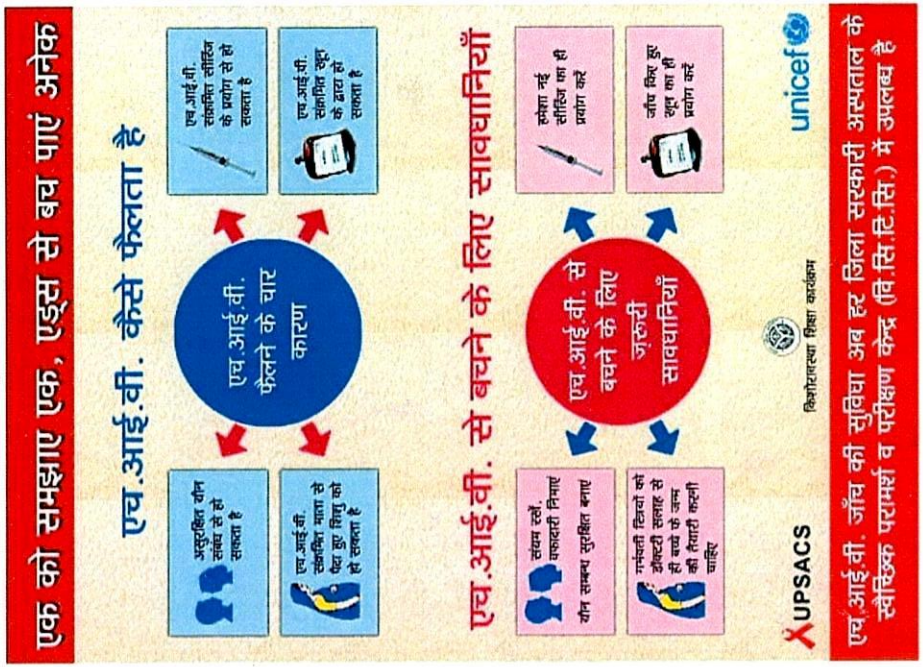

HIV/AIDS INFOGRAPHICS

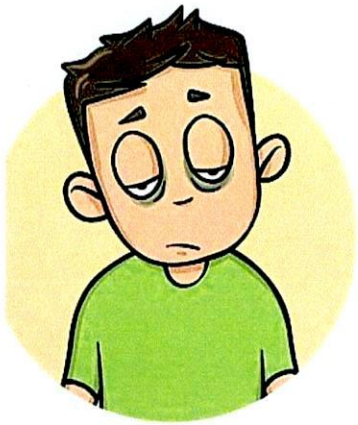

एड्स का संक्रमण कैसे होता है?

यौन संपर्क का कोई भी रूप जिसमें वीर्य, प्री-सह, योनि तरल पदार्थ या रक्त शामिल हो।

संक्रमित रक्त – खासतौर पर संक्रमित इंजेक्शन साझा करने या संक्रमित रक्त चढ़ाने से.

नशीली दवाईयां एवं पदार्थ इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन.

एच.आई.वी संक्रमित व्यक्तियों से अंग दान लेने से।

© kulhaiya.com

एच.आई.वी संक्रमित व्यक्ति व्यक्तियों का इस्तेमाल किया गया बसेड व रेजर आदि से भी एड्स हो सकता है।

जन्म के दौरान या जन्म से पहले या स्तन दूध के माध्यम से बच्चे को एड्स हो सकता है।

भारत में एचआईवी / एड्स

भारतीय धार्मिक आख्यान साक्षी है कि 'एड्स' नामक रोग का उल्लेख प्रच्छन्न रूप से अनेक स्थलों पर आ चुका है। महाभारतकालीन एक साक्ष्य प्राप्त होता है, जिसके आधार पर कहा गया है कि भीष्म पितामह के सौतेले भ्राता विचित्रवीर्य की मृत्यु का कारण एड्स ही था।

अप्रैल 1986 में, सर्वप्रथम मद्रास की कुछ वेश्याओं में यह रोग पाया गया। संस्था (NACO) के 2000 के आंकड़ों के अनुसार

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण भारत के करीब 38 लाख लोग एच.आई.वी रोग से ग्रासित हैं।

भारतीय परंपरा के समानांतर 'बाइबल' में भी कतिपय ऐसे दृष्टांत मिलते है; जिनसे ज्ञात होता है कि एड्स का अस्तित्व प्रच्छन्न रूप से इस काल में भी था।

एच. आई. वी का संक्रमण

1. यौन संपर्क का कोई भी रूप जिसमें वीर्य, प्री-सद, योनि. तरल पदार्थ या रक्त शामिल हो।
2. संक्रमित रक्त - खासतौर पर संक्रमित इंजेक्शन साझा करने या संक्रमित रक्त चढ़ाने से।
3. नशीले दवाईयां एवं पदार्थ इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन
4. एच. आई. वी संक्रमित व्यक्तियों से अंग दान लेने से।
5. एच. आई. वी संक्रमित व्यक्तियों का इस्तेमाल किया गया ब्लेड वे रेजर आदि से भी एड्स हो सकता है।
6. जन्म के दौरान या जन्म से पहले या स्तन दूध के माध्यम से बच्चे को एड्स हो सकता है। माता से पैदा हुआ शिशु को हो सकता है।

एड्स के कुछ लक्षण इस प्रकार है:

1. बिना वजह ही अचानक वजन का कम हो जाना, मूल वजन का 10 प्रतिशत तक वजन कम होना, हर माह 5 किलो से ज्यादा वजन कम होना, और यह सब बिना किसी उचित कारण के, जैसे कम आहार लेना, अधिक तनाव या अन्य बीमारियाँ, जिनकी वजह से भूख कम लगती है।
2. एक महीने से ज्यादा तक जुकाम का होना।
3. एक महीने से ज्यादा तक बुखार और खाँसी का चलना।
4. बुरशी नामक कवक के संक्रमण से मुंह में व्रण छालों के निर्माण होने से गर्म व मसालेदार भोजन खाने में तकलीफ होना।
5. या का कर्करोग और हरपीस का संक्रमण होना।
6. बुखार के साथ रात में पसीना
7. लिम्फ नोड्स में सूजन
8. एचआईवी वायरस का पहला लक्षण 2 से 6 हफ्तों के बीच में दिखाई देने लगता है
9. सिर दर्द, डायरिया, उल्टी, आदि।

एड्स के
शुरुआती
लक्षण
Onlymyhealth

एच.आई.वी संक्रमण किस माध्यमों से नहीं होता है:

1. हाथ मिलाने से।
2. एक साथ बैठने या यात्रा करने से।
3. खाँसने से या छींक से, आँसुओं से।
4. आलिंगन या चुम्बन से।
5. एच.आई.वी. बाधित व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त तालाब, तरणताल, टेलीफोन या शौचालय के प्रयोग से।
6. बाधित व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त किये गये बर्तन, कप, प्लेट, चादर, या कपड़े।
7. एक साथ खाना खाने से।
8. मच्छरों या खटमलों के काटने से।
9. एच.आई.वी. बाधित व्यक्ति की सेवा करने से।
10. किसी भी प्रकार से अनजाने में हुए सम्पर्क से, जैसे बस या ट्रेन में धक्का लगना, पीठ पर थपथपाना आदि।
11. रक्तदान करने से।

यह एच.आई.वी रोग दूसरों को संक्रमित नहीं होता है।

12. एक दूसरे मिलजुल कर रहने से नहीं होता है।

एच. आई. वी से बचने के लिए सावधानियाँ

1. संयम रखें, वफादारी निभाएँ यौन सम्बन्ध सुरक्षित बनाएं
2. गर्भवती स्त्रियों को डॉक्टरों सलाह से ही बच्चे के जन्म की तैयारी करनी चाहिए
3. हमेशा नई सीरिंज का ही प्रयोग करें
4. जाँच किए हुए खून का ही प्रयोग करें।
5. नशीले दवाईयां एवं पदार्थ को चढ़ाने से दूर रहना।
6. अंग दान लेने के समय सावधानि रहनी चाहिए। पहले जाँच कर दूसरों से अंग लेना है।
7. अस्पताल मे ब्लेड व रेजर की उपयोग करनी के समय सावधानि रहना चाहिए।
8. बाह्य आकर्षणों का परिणाम हमेशा बुरा ही होता है। इससे दूर रहना है।

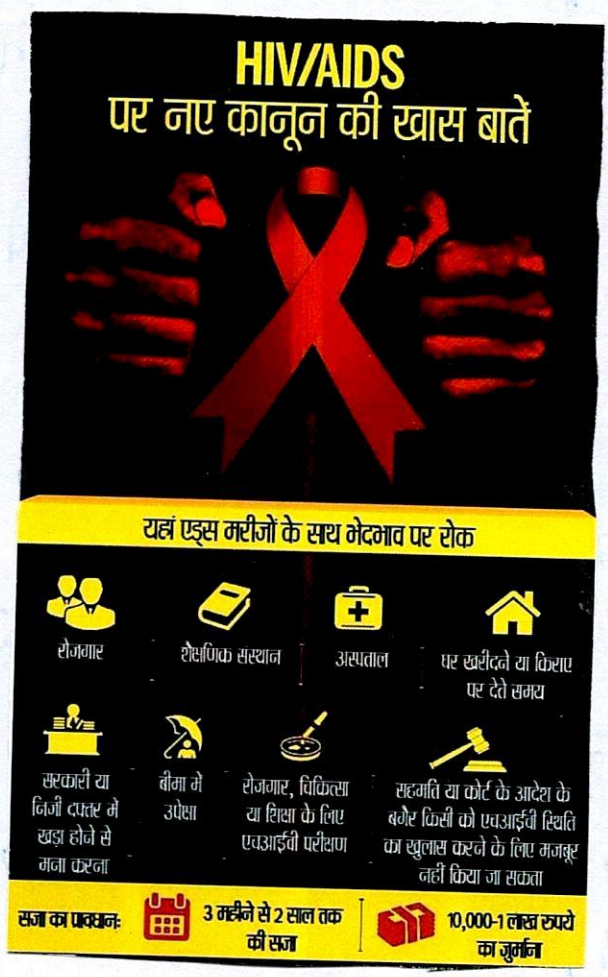
HIV/AIDS
पर नए कानून की खास बातें
यहां एड्स मरीजों के साथ भेदभाव पर रोक
रोजगार
शैक्षणिक संस्थान
अस्पताल
घर खरीदने या किराए पर देते समय
सरकारी या निजी दफ्तर में खड़ा होने से मना करना
बीमा से उपेक्षा
रोजगार, चिकित्सा या शिक्षा के लिए एचआईवी परीक्षण
सहमति या कोर्ट के आदेश के बगैर किसी को एचआईवी स्थिति का खुलासा करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता
सजा का प्रावधान:
3 महीने से 2 साल तक की सजा
10,000-1 लाख रुपये का जुर्माना

मुख्य विषय :

1. एच. आई. वी / एड्स अमेरिका से अन्य देशों को फैला है।

2. बाह्य आकर्षणों का परिणाम हमेशा बुरा ही होता है।

3. मनुष्य को हर तरह से निष्ठावान बनकर समाज मे अच्छा नाम कमाना है।

4. ईश्वर के द्वार पर देर है अंधेर नही, कम-से कम अब भी अभ्यास किया और कराया जा सकता है कि संक्रमण रोगों के गिरफ्त में आये। जिससे लज्जाजनक जीवन बिताना पड़े।

5. मनुष्य को अपना जीवन हमेशा उदात्त विचारों भावों, भावनाओं सत् संगति, आध्यात्मिक चिंतन-मनन में लगाना चाहिए विशेषकर नवयुवकों को, इससे प्राप्त होने वाला आनन्द अनन्त असीम है।

शासकीय महाविद्यालय पाडेरू

सेमिनार

नाम :- के. धनलक्ष्मी

कक्षा :- बि.ए.सी (II M.P.C)

विषय :- नारी शिक्षा

नारी सिक्षा

नारी शिक्षा का महत्व : जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न है यह तो नारी हो या पुरुष दोनों के लिए समान रूप से महत्वपुर्ण है। इशिक्षा का कार्य तो व्यक्ति के विवेक को जगाकर उसे सही सही दिशा प्रदान करना है। शिक्षा-स्त्री को समान रूप से हित-साधन किया करती है। परन्तु फिर भी भारत जैसे विकास शील देश में नारी की शिक्षा का महत्व इसलिए अधिक है कि वह की भावी पीढ़ी को योग्य बनने के कार्य में उचित मार्ग-दर्शन कर सकती है।

बच्चे सबसे अधिक माताओं के सम्पर्क में रहा करते है। माताओं के संस्कारो, व्यवहारों व शिक्षा का प्रभाव बच्चो के मन-मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ा करता है। शिक्षित माता ही बच्चें के कोमल व उर्वर मन-मस्तिष्क में उन समस्त संस्कारों के बीच बो सकती है जो आगे चलकर अपने समाज, देश और राष्ट्र के उत्थान के-

ଆମ ସଫଳତାର ଗାଥା

NOBLAND

लिए परम आवश्यक हुआ करते है।
नारी का कर्तव्य बच्चों के पालन-पोषण करने के अतिरिक्त अपने घर-परिवार की व्यवस्था और संचालन करना भी होता है। एक शिक्षित और विकसित मन-मस्तिष्क वाली नारी अपनी आय, परिस्थिति, घर के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता आदी का ध्यान रखकर उचित व्यवस्था एवं संचालन कर सकती है। अशिक्षित पत्नी होने के कारण अधिकांश परिवार आज के युग में नरक के समान बनती जा रहे है। अतः विद्वानों का कथन है कि गृहस्थी है।

विश्व की प्रगति शिक्षा के बल पर ही चरम सीमा तक सकी है। विश्वसंघर्ष को जितने के लिए शस्त्र-शास्त्र की आवश्यकता पड़ती हो यदि नारी जाती अशिक्षित हो, तो वह अपने जीवन को विश्व की गति के अनुकूल बनाने में सदा असमर्थ नही। यदि वह शिक्षित हो जाए तो उसका पारिवारिक जिवन स्वर्गमय हो सकता है और उसके साथ देश, समाज-

और राष्ट्र की प्रगती में वह पुरुषों के साथ - कन्धे - से - कन्धा मिलाकर चलने में समर्थ हो सकती है। भारतिय समाज में शिक्षित माता गुरु से भी बढ़ कर मानी जाती है। क्योंकि वह अपने पुत्र को महात्मा से महान बना सकती है।

आज स्वयं नारी समाज के सामने घर - परिवार परिवेश, समाज, रीति नीतियों तथा परम्पराओं के नाम पर जो अनेक तरह की समस्याएँ उपस्थित हैं उनका निराकारण नारी - समाज हर प्रार की शिक्षा के धन से सम्पन्न होकर ही कर सकती हैं। इन्हीं सब कुरीतियों को दूर करने के लिए नारी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। सुशिक्षा के द्वारा नारी जाति समाज में फैली कुरीतियों व कुप्रथाओं को मिटाकर अपने ऊपर लगें लाँछनों का सहज ही निराकरण कर सकती है।

* * * * *

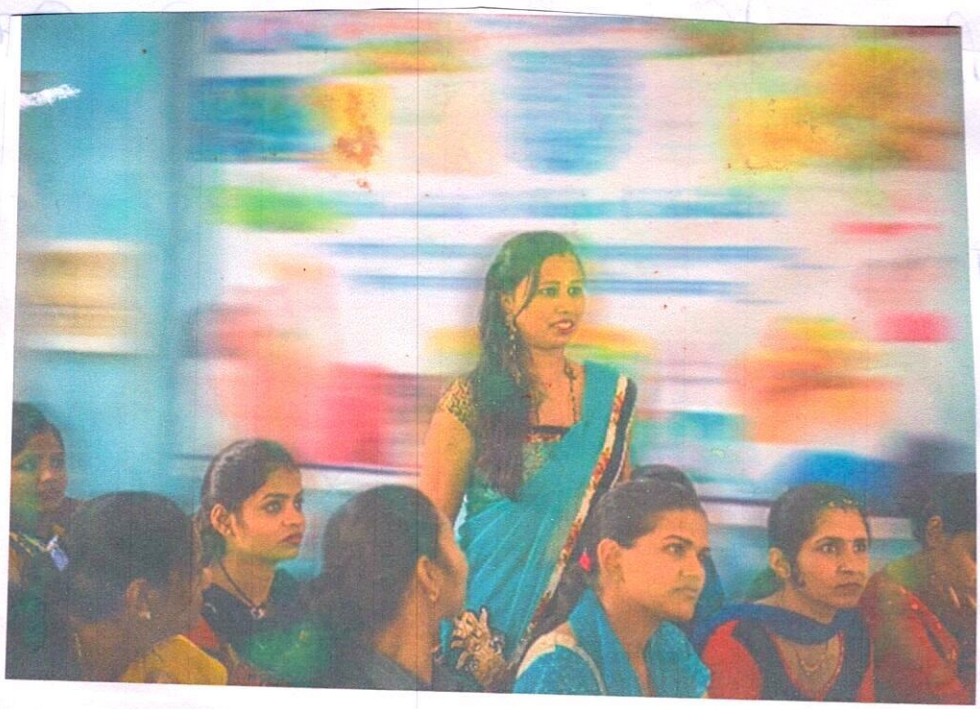

PACE

स्वच्छ भारत

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया सफाई को लेकर राष्ट्रव्यापी अभियान स्वच्छ भारत अभियान के रूप मे बहुत कारगर हो रहा है। महात्मा गाँधी को था कि भारत भी एक दिन स्वच्छ राष्ट्र बनेगा माननीय प्रधानमंत्री द्वारा बापू जी गाँधी की 145 वी जयंती पर यह अभियान शुरू किया गया है और अनुमान है कि उनकी 150 वी जयंती तक भारत देश स्वच्छ देशों की श्रेणी मे होगा जायेगा।

उनका वह सपना आज सच होता नजर आने लगा है क्यो कि भारत का प्रत्येक नागरिक इसके प्रति उत्साहित है और वह अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझता है कि उसे अपने देश को स्वच्छ रखना है? यह अभियान एक विशाल जन आन्दोलन का रूप ले चुका है जिसमे आम नागरिक नवकारा हाव गैर सरकारी संस्थान तथा आयकर हर व्यक्ति अपनी तरफ से भागीदारी कर रहा है।

इस अभियान से लोगो मे सफाई के प्रति कुछ इस स्वरूप बिन्दु ओ पर ध्यान केन्द्रित करने पर जोर दिया गया है। जैसे खुले मे शौच न करना जैसे र ... शौचालयों का ... ब... ...करण

एवं अजैविक को अलग,
अलग रखना, सफाई के सही
तरीके अपनाना, सफाई की
अच्छी आदतों का विकास करना
स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूकता
करना, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था
लागू करना आदि इसके मुख्य बिन्दु हैं।
इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए एक बहुत ही रुचिपूर्ण
तरीका अपनाया गया है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति 9 व्यक्तियों
का इसमें जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और ये 9
लोगों को इस कार्यक्रम में जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा।
यह जुड़ने का सिलसिला तब तक चलता रहेगा। जब तक
प्रत्येक नागरिक इस अभियान से जुड़ कर देश को स्वच्छ
रखने में अपनी भागीदारी नहीं देता। इस अभियान के सफल
बनाने के लिए नुक्कड़ नाटकों टेली-फिल्मों पद यात्राओं
विद्यालयों में जागरूकता कार्यशालाओं आदि पद यात्राओं,
विद्यालयों माध्यमों का सहयोग लिया जा रहा है।
भारत में अभी भी कई घर ऐसे है जहाँ शौचालय नहीं है और
लोग खुले में नहीं ही शौच जाते हैं. ऐसे स्थानों पर शौचालयों
का निर्माण कराया जा रहा है। जिन घरों में मल के लिए
शौचालय है भी तो वहाँ गन्दगी के निस्तारण की कोई
सुविधा नहीं है। इस प्रकार की गन्दगी को
हाथों द्वारा साफ किया जाता है और
हाथ साफ करने के बावजूद भी
कितणु हाथों से मुँह तक पहुँच कर
लोगों को गंभीर बिमारियों से
पीड़ित कर रहे हैं। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए लोगों को

के जागरूक किया जा रहा है
कि वे कैसे अपने को कष्ट
पहुँचाये बगैर शौचालयों की
गन्दगी को साफ कर सकते है।

जिन इलाकों में नगर निगम की कचरा ले जाने
वाली गाड़ी नहीं आती थी उन स्थानों पर कचरा ढोने की
गाड़ियों का प्रबन्धन किया गया है और लोगों को जैविक
व अजैविक कचरों को अलग-अलग रखने की जानकारी
व महत्त्व पर जागरूक किया जा रहा है। कई अन्य
कार्यक्रम है जिन्हें लागू किया जाना बाकी कई अन्य कार्यक्रम
है जिन्हें लागू किया जाना बाकी है और प्रक्रिया में है।
महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को सच करने के
लिए हम सबको मिल कर साथ देना होगा. तभी हम
कामयाब हो पायेंगे।

Students participate in cleanliness drive

KL - (Deemed-to-be University) BBA, CSE, Law and Agriculture, to date in all the adopted villages to ensure their consistent improve-

एवं अलौकिक को अलग,
अलग रखना, सफाई के सही
तरी के अपनाना, सफाई की
अच्छी आदतों का विकास करना
स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूकता
करना, ग्रमीण और शहरी क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था
लागू करना आदि इसके मुख्य बिन्दु हैं।
इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए एक बहुत ही सार्थपूर्ण
तरीका अपनाया गया है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति ९ व्यक्तियों
को इसमें जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और ये ९
लोगों को इस कार्यक्रम में जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा।
यह जुड़ने का सिलसिला तब तक चलता रहेगा। जब तक
पत्येक नागरिक इस अभियान से जुड़ कर देश को
स्वच्छ रखने में अपनी भागीदारी नहीं देता। इस अभियान
के सफल बनाने के लिए नुक्कड़ नाटकों, टेली-फिल्मों,
पद यात्राओं, विद्यालयों में जागरूकता कार्यशलाओं आदि
माध्यमों का सहयता लिया जा रहा हैं।

भारत मे अभी भी कई घर एसे है जहाँ शौचालय नहीं है
और लोग खुले में नहीं ही शौच जाते हैं, एसे स्थानों
पर शौचलायों का निर्माण कराया जा रहा हैं। जिन घरों मे
नाल के लिए शौचालय है भी तो वहाँ गन्दगी के
निस्तारण की कोई सुविधा नहीं हैं। इस प्रकार
की गन्दगी को हाथों द्वारा साफ किया जाता है
और हाथ साफ करने के
बावजूद भी कीटाणू हाथों
से मुँह तक पहुँच कर लोगों
को गंभीर बीमारियों से पीड़ित
कर रहे हैं। एसी स्थिति से
निपटने के लिए लोगों जो। को

जागरूक किया जा रहा है कि वे कैसे अपने को कष्ट पहुँचाये बगैर शौचलयों की गन्दगी को साफ कर सकते हैं।

जिन इलाकों में नगर निगम की कचरा ले जाने वाली गाड़ी नहीं आती थी उन स्थानों पर कचरा ढोने की गाड़ियों का प्रबन्धन किया गया है और लोगों को जैविक व अजैविक कचरों को अलग-अलग रखने की जानकारी व महत्ता पर जागरूक किया जा रहा है। कई अन्य कार्यक्रम हैं जिन्हे लागू किया जाना बाकी है और प्रक्रिया में हैं। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को सच करने के लिये हम सबको मिल कर साथ देना होगा, तभी हम कामयाब हो पायेंगे।

विश्व भाषा रूप में हिन्दी.

★ हिन्दी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। और जितना अधिक हम हिन्दी और भाषाओं का प्रयोग शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदी में करेंगे, उतनी ही तेज गती से भारत का विकास होगा।

★ भारत की संविधान सभा ने 1949 सितंबर 14 को भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी जन का साधारण ढंग बोली जाने वाली एक सरल भाषा है। हिन्दी पुरातन भी है और आधुनिक भी। इसी कारण आज वैश्वीकरण के दौर में, हिन्दी का महत्व और भी बढ़ी गयी है। हिन्दी विश्व स्तर पर एवं प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज विदेशों में उनके विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ाई जा रहा है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिन्दी में लिखी जा रहा है।

★ जितना अधिक हम हिन्दी और प्रांतीय भाषाओं का प्रयोग शिक्षा, ज्ञान – विज्ञान, प्रौद्योगिक आदी में करेगा, उतनी तेज गति से भारत का विकास होगा।

★ हिन्दी भारतवर्ष की विविधता में एकता का प्रतीक है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गान्धी, पंडित नेहरू मौलना अबुल कलाम आजादी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, डा. अम्बेडकर, वी. राजगोपालचारी जैसे महापुरुषों ने हिन्दी का भारत की संपर्क भाषा की रूप में अपनाकर आजादी की लडाई लड़ी थी।

★ हिन्दी भारतीय की चेतना है। तथा सभी प्रांतीय भाषा ओं संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है। हिन्दी और भारतीय प्रांतीय भाषाओं के साहित्य की भूमिका निभाती है। हिन्दी और भारतीय साहित्य का परस्पर अनुवाद को हमें बढ़ावा देना होगा।

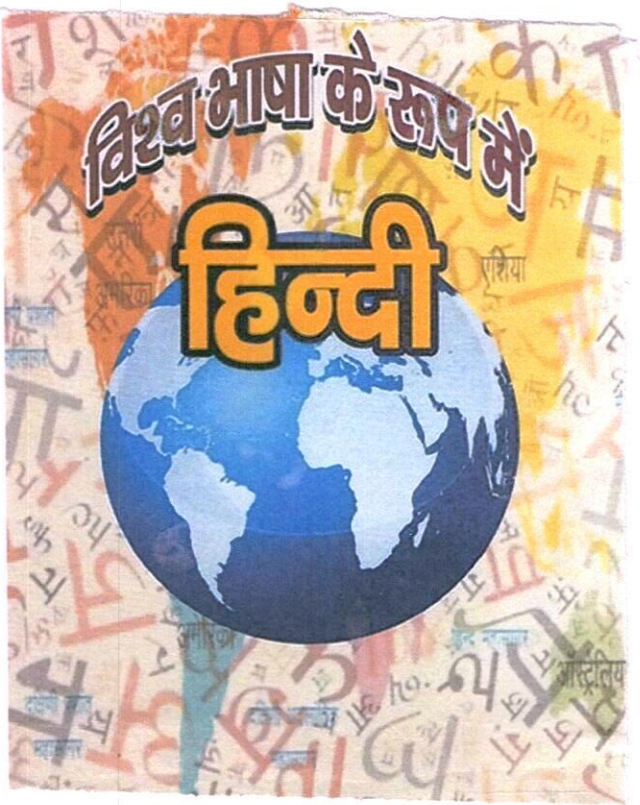

* हिन्दी भारतीय प्रांतीय भाषाओं के साहित्य के परस्पर अनुवाद लाभ देने से हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं में संबद्ध और गहरा होगा।

लोगों के एक दूसरे से सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा संस्कृतिक पहलों का ज्ञान होगा।

* सरकार द्वारा हिन्दी में अच्छे कार्य के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। हिन्दी में लिखना के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार का प्रावधान है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान में हिन्दी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए भी सरकार पुरस्कार प्रधान करती है। इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिन्दी के विस्तार को बढ़ावा मिलेगा।

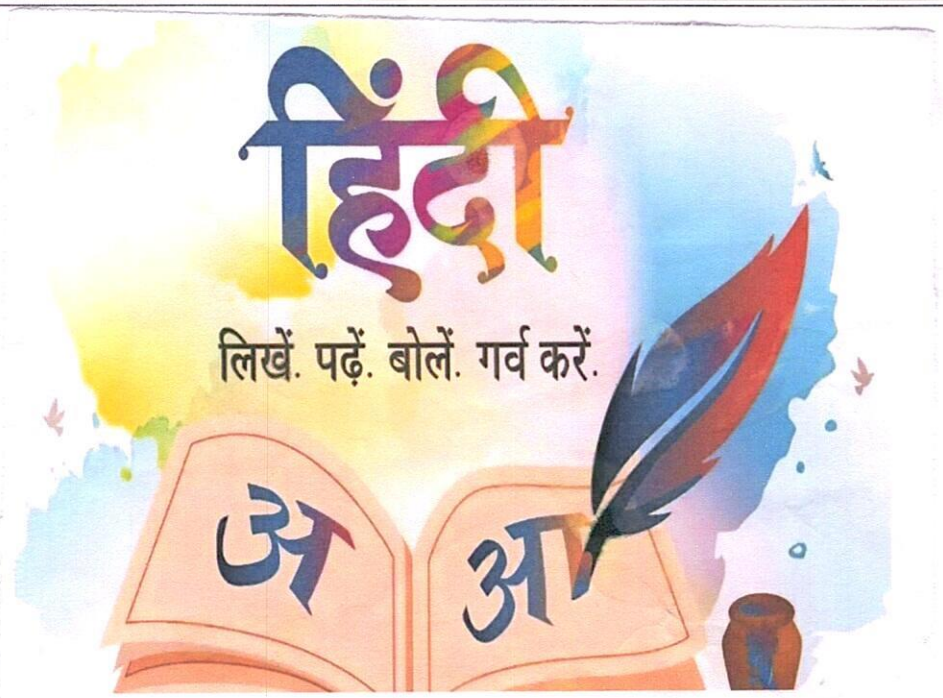

* भारत सरकार द्वारा विकास योजनाएँ तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जिन सुविधाएं लोगों तक पहुँच सकता है।

* हिन्दी की शक्ति और क्षमता से हम भली-भाँती परिचित हैं। महात्मा गांधी ने कहा था की राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नती के लिए आवश्यक है।

समाप्त